आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2399 • उदयपुर, सोमवार 19 जुलाई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्
दिव्यांगों की सेवा में, आपकी नारायण सेवा

अनाथ 6 भाई–बहन की मदद को पहुंची नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सहयोग से माता–पिता की दुर्घटना में मौत से अनाथ हुए 6 बच्चों तक बड़गांव तहसील के कालबेलिया कच्ची बस्ती में राशन और मदद लेकर पहुंची। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि पीड़ित मानवता की सेवा में सदैव तत्पर निदेशक वंदना जी अग्रवाल की टीम ने 6 अनाथ भाई–बहनों की विभिन्न साइज के कपड़े और मासिक खाद्य सामग्री जिसमें आटा, चावल, दाल, शक्कर, तेल, मसाले आदि थे, भेंट किए गए। साथ ही बच्चों एवं पड़ोसियों को विश्वास दिलाया कि भविष्य में भोजन, राशन, वस्त्रादि की हरसंभव मदद की जाएगी।

आशियाना फिर बसा
मदद को तरसती पत्नी और मासूमों को नारायण सेवा ने संभाला

उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल जोर जी का खेडा निवासी मीना (बदला हुआ नाम) का पति अहमदाबाद में नमकीन की दुकान पर काम करता था। कोरोना की दूसरी लहर में खराब तबीयत के चलते वो गांव आया और दो दिन बाद मृत्यु हो गई। एक तरफ पत्नी पति की मौत से दुःखी थी तो दूसरी तरफ तीन बेटियों और वृद्ध सासु मां की चिंता भी उसे सता रही थी।

असमय मौत से असहाय परिवार के घर में न आटा था न दाल और न ही पैसा भोजन को मोहताज परिवार पर ताउते तूफान का कहर भी ऐसा बरपा की टूटी– फूटी छत भी उड़ गई। परिवार के पांचों जन ने बारिश में रातें गुजारी तो बाद में तेज धूप में तपने को मजबूर हो गए।

नारायण सेवा संस्थान ने ली सुध

संस्थान की आदिवासी क्षेत्रों में राशन बांटने वाली टीम को पता चला तो वे वहां पहुंचे। दुःखी परिवार को ढ़ाढस बंधाते हुए मदद के लिये हाथ बढ़ाया।

हर माह मिलेगा राशन

मृतक मजदूर परिवार को संस्थान ने मौके पर ही महीने भर का आटा, चावल, तेल, शक्कर, चाय, दाल, और मसाले दिए। हर माह इस परिवार को राशन दिया जाता रहेगा।

संस्थान बनाएगा पक्की छत –

घर की छत का निर्माण भी संस्थान द्वारा करवा लिया गया। जब बरसात के दिनों में उसे तकलीफ नहीं होगी।

नारायण सेवा संस्थान के सहयोग से
जशोदा को दिव्यांगता से मिली निजात

उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद जिले में लाईट फिटिंग का कार्य कर परिवार का भरण–पोषण करने वाले राजेन्द्र प्रसाद की बेटी जशोदा जब 12 साल की थी, एक दिन बुखार आया जो उसे पोलियो का दंश देकर ही गया।

गरीब माता–पिता के लिए परिवार का भरण–पोषण ही मुश्किल हो रहा था और अब यह आसमान टूट पड़ा। दिव्यांगता के चलते बच्ची के अनिश्चित भविष्य पर मां–बाप के लिए सिवाय आंसू बहाने के कुछ भी न था। उम्र के साथ जशोदा की परेशानियां बढ़ती गई। बिना सहारे शरीर को संभालना उसके बस में न था। माता–पिता ने कर्ज लेकर उसके इलाज की हर संभव कोशिश की लेकिन डॉक्टरों के अनुसार स्थिति में सुधार का एक मात्र विकल्प ऑपरेशन था, जिसमें खर्च का जुगाड़ परिवार के पास नहीं था। जशोदा को भी अब दिव्यांगता से छुटकारे की उम्मीद भी नहीं रही। कहते हैं कि जब सब तरफ अंधेरा होता है तब प्रकाश की कोई हल्की सी किरण दिखाई भी दे जाती है। टेलिविजन चैनल के माध्यम से परिवार को नारायण सेवा संस्थान में पोलियो के निःशुल्क ऑपरेशन की जानकारी मिली।

माता–पिता जशोदा को लेकर उदयपुर आए। उसके पालियोग्रस्त पांव का संस्थान के आर.एल. डिडवानिया हॉस्पीटल में पहला ऑपरेशन हुआ। एक पैर बिल्कुल मुड़ा होने और पीठ में ट्यूमर होने के कारण 7 ऑपरेशन और 9 माह आई.सी. में रहने के बाद और जांघ की चमड़ी को पैर के पंजे पर लगाई तब वो पैर पर खड़ी हुई।

सहारा लेकर चलने वाली जशोदा अब कैलीपर के सहारे के चलती हैं। जशोदा ने संस्थान में ही रहकर 3 माह का सिलाई प्रशिक्षण भी लिया। बी. ए. अंतिम वर्ष की छात्रा जशोदा संस्थान के सिलाई केन्द्र में रोजगार पाकर खुश है।

दिव्यांगों को सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन

–लेखक श्री प्रशान्त अग्रवाल नारायण सेवा संस्थान अध्यक्ष

कोविड–19 एक तूफान की तरह आया है और इसके कारण अचानक जो बदलाव हुए हैं, उन्होंने पूरी दुनिया को थोड़ा और आधुनिक बना दिया है। सिर्फ फार्मेसी ही नहीं, तकनीक, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों के वैश्विक ढ़ांचे में भी बदलाव हुए हैं। इसमें सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात यह है कि हम किस तरह इन बदलावों के साथ चल रहे हैं। पिछले कई वर्षों से स्वास्थ्य के इंफ्रास्ट्रक्चर को ऑनलाइन प्लेटफार्म पर लाने के जबरदस्त प्रयास चल रहे हैं और कोविड–19 के दुनिया भर में बढ़ते मामलों ने सभी अर्थव्यवस्थाओं को अपने स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए मजबूर किया है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की ग्लोबल स्ट्रेटेजी ऑन डिजिटल हेल्थ 2020–2024 रिपोर्ट बताती है सब जगह, सब आयु वर्ग और सब के लिए स्वस्थ जीवन और जीवनशैली को प्रोत्साहित करना इसका मुख्य उद्देश्य है। 2019 में जारी यह रिपोर्ट कहती है कि सभी देशों में स्वास्थ्य सुविधाओं को आगे बढ़ाने और सहायता करने तथा सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल को प्राप्त करने में डिजिटल हेल्थ सहायक रहेगी।

यह स्वास्थ्य को बेहतर करने तथा बीमारियों को रोकने में भी सहायक रहेगी। इसी को देखते हुए रिपोर्ट में यह सुझाव दिया गया था कि इसकी संभावनाओं का पूरा इस्तेमाल करने के लिए राष्ट्रीय या क्षेत्रीय डिजिटल स्वास्थ्य प्रयास एक मजबूत रणनीति के तहत किये जाने चाहिए। इस रणनीति में वित्तीय, संगठनात्मक, मानवीय और तकनीकी संसाधनों का समावेश होना चाहिए।इस रणनीति पर विचार और काम करते हुए कई देशों ने डिजिटल स्वास्थ्य रणनीतियों को तेजी से लागू करना शुरू किया है। इसी तरह की एक रणनीति भारत सरकार ने विकसित की है जिसे राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन कहा गया है।

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन का मुख्य उद्देश्य एक ऐसा मजबूत डाटाबेस तैयार करना है जिसमें समावेशी स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर को शामिल किया जाएगा। इसके जरिये ऐसे पहचान पत्र तैयार किए जाएंगे जिनसे देश के प्रत्येक व्यक्ति को बाधारहित स्वास्थ्य सेवाएं मिलती रहें। हालांकि स्वास्थ्य के इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने के गम्भीर प्रयास किए गए हैं लेकिन दिव्यांगों को बाधारहित स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करने में आज भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

दिव्यांगों के सामाजिक समावेशन के विचार को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन दिव्यांगों को इस तरह सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा कि वे अपनी मनचाही स्वास्थ्य सेवाएं मांग सकें और प्राप्त कर सकें। मिशन को इस तरह बनाया गया है कि यह सभी के लिए बिना भेदभाव का एक ही तरह का प्लेटफार्म उपलब्ध कराएगा और स्वास्थ्य पहचान पत्रों के जरिये सामाजिक समावेशन करेगा। इससे हर व्यक्ति और दिव्यांग का अलग ई–रेकॉर्ड तैयार हो सकेगा। अब बड़े संस्थानों ने अपनी बाहे खोल दी हैं और दिव्यांगों स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के अवसर निश्चित रूप से प्रदान करेगा।

नारायण सेवा संस्थान सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करता है और इसके उददेश्य का पूरी तरह समर्थन करता है, क्योंकि इससे ना सिर्फ पूरे स्वास्थ्य ढांचे को बदलने में मदद मिलेगी, बल्कि देश में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में पारदर्शिता भी आएगी।

को अपने यहां काम दे रहे हैं क्योंकि अब ऐसे कई कौशल आधारित कार्यक्रम उपलब्ध हैं जो दिव्यांगों को काम के लिए तैयार कर देते हैं।

महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके पास अपनी स्वास्थ्य रिपोर्ट रहेगी जिससे ये संस्थान अपने केडिडेट चुनते समय अपनी जरूरत के हिसाब से निर्णय कर सकेंगे। नारायण सेवा संस्थान वर्षों से इस तरह के सफल प्रयास कर रहा है जिससे इन दिव्यांगों को उसी तरह का वातावरण मिल सके जो मुख्य धारा के कैडिडेट्स को मिलता है। नारायण सेवा संस्थान इन दिव्यांगों को कौशल विकास का प्रशिक्षण देने से लेकर एक बेहतर जीवनशैली का अवसर देने तक का प्रयास कर रहा है। यहां इनकी क्षमताओं को बढ़ा कर उन्हें जीवन के हर क्षेत्र की चुनोतियाँ का सामना करने के लिए तैयार किया जा रहा है। राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन में इन दिव्यांगों के ई–रेकॉर्ड होंगे जिससे सरकार को इन्हें दिए जाने वाले उपचार के बारे में भविष्य की योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी और ये लोग मुख्य धारा के वातावरण के लिए तैयार हो सकेंगे। राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन के लागू होने के बाद दिव्यांगों के लिए कई सकारात्मक पहल होती दिखेगी। इनमें किफायती जैविक उत्पाद और उपचार शामिल होंगे। इसके जरिए उन नई तकनीकों को भी बढावा मिलेगा जो दिव्यांगों के उपचार के लिए जरूरी सामान देश में ही तैयार हो सकेगा। राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन पूरे स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को साथ लाकर दिव्यांगों को सक्षम, सशक्त और प्रोत्साहित करेगा ताकि वे अपनी मनचाही स्वास्थ्य सेवा मांग और प्राप्त कर सकें। यह मिशन नए उभरते हुए उद्यमियों और स्टार्टअप्स या घरेलू व्यवसायों को दिव्यांगों के लिए उपयोगी किफायती और आसानी से उपलब्ध उत्पाद व

पीड़ित किसान परिवार को मदद

कुछ दिन पहले गंगाखेड़ क्षेत्र के कतकरवाड़ी में किसान मंचक कतकड़े के घर में भीषण आग लग गई थी। आग ने उनके घर और उनकी आजीविका बकरियों और उनके दो चूजों को नष्ट कर दिया और दो बैलों को क्षति पहुंचाई। गरीब परिवार संकट में आ गया। कोरोना के कारण, उन्हें शिकायत दर्ज करने के लिए वाहन भी नहीं मिल सके।

मदद की आशा से गरीब किसान परिवार के सदस्य डेप्युटी कलेक्टर सुधीर जी पाटिल के कार्यालय में गए और उन्हें अपनी स्थिति व क्षति की जानकारी दी। यह महसूस करने हुए इस किसान को कानून के ढ़ांचे के भीतर मदद नहीं मिलेगी, सुधीर पाटिल ने धर्मार्थ संगठन, नारायण सेवा संस्थान उदयपुर जो हर मुश्किल में जरूरतमंद को सहायता के लिए तैयार रहता है।

परभणी जिला संयोजिका श्रीमती मंजू दर्डा से संपर्क किया और उनसे मदद का अनुरोध किया। इस पर उन्होंने पीड़ित किसान परिवार को खाद्यान्न, बर्तन, कपड़े आदि सामान दिया। इस अवसर पर पूजा दर्डा, सखाराम बोबड़े, राहुल सबने एवं हर्ष आंधले भी उपस्थित थे।

सम्पादकीय

सहयोग शब्द की व्यापकता बहुत है। यह शब्द स्वयं 'स्व' से हटाकर 'पर' पर ले जाता है। सहयोग मांगने पर भी किया जाता है और बिना मांगे भी। मांगने पर जो सहयोग होता है वह मानव– धर्म है पर यदि बिना मांगे ही सहयोग हो तो यह देव– धर्म कहलाता है। सहयोग करने वाला यदि अपने मन में किसी न किसी अपेक्षा या आकांक्षा का भाव रखता है तो यह आसुरी–धर्म है। सहयोग का भाव मन की उदारता का प्रतीक होता है। जब कोई सहयोग करता है तो उसके मन में विभिन्न प्रकार के भाव हो सकते हैं। वह सोच सकता है कि किसी का सहयोग करने से पुण्य की प्राप्ति होगी। कोई सोच सकता है कि मेरे पास आवश्यकता से अधिक कुछ है तो कुछ अंश किसी के काम आये तो क्या बुरा? ये दोनों सोच अच्छे हैं। किन्तु सहयोग का श्रेष्ठतम भाव यही है कि किसी का सहयोग करना मेरा कर्तव्य है। प्रभु ने मुझे समर्थ बनाया है तो मैं अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए जरूरतमंद का सहयोग करूं।

कुछ काव्यमय

एक दूसरे का करें,
सद्मन से सहयोग।
परमेश्वर ने जो दिया,
करें सभी उपयोग।।
एक दूसरे के लिये,
जीना ही सहयोग।
बड़े भाग से है मिला,
सहजीवन संयोग।।
मदद करे वो मानवी,
वरना झोंकी भाड़।
समझू रहते प्रेम से,
मूरख करते राड़।।
मानवता तो मदद से,
महके जैसे फूल।
यही कहे सब देवता,
कह गये गुरु रसूल।।
जो सहयोगी और का,
उस पे विधि का हाथ।
यह तो प्रभु का काम हैं,

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

पल की खबर नहीं पीढियों की फिक्र

एक साहूकार के पास बहुत ज्यादा धन था। वह इसमें और इजाफा करने में ही लगा रहता। एक दिन उसने अपने मुनीम को बुलाया और उससे कुल जमा धन के बारे में पूछा। मुनीम बोला–'महाशय, आपकी दस पीढ़ियां उपयोग करें भी तो भी शायद खत्म न हो। इस पर साहूकार बोला– अरे, भाई तो आज से ही सतर्क हो जाओ, उससे आगे की पीढियों के इन्तजाम में लगो। मुनीम को आश्चर्य हुआ कि दस पीढ़ियों के लिए जमा धन से भी इसे सन्तोष नहीं है। मुनीम समझदार था। धर्म–कर्म और सत्संग में उसकी रूचि थी। उसने कहा–'सेठजी ! यदि आप जमा धन में से कुछ परोपकार के लिए खर्च करें तो धन की आवक स्वतः बढ़ जाएगी। सेठ ने कहा– 'अरे, मूर्ख! खर्च से धन घटेगा, बढ़ेगा कैसे? मुनीम ने कहा –'मेरा कहा करके तो देखिये। साहूकार ने कहा– अच्छा तुम ही बताओ, क्या परोपकार करूं? मुनीम बोला– पास ही गली में एक बूढ़ी माँ रहती है, चलने–फिरने में अशक्त है, उसे गुजारे लायक आटा–दाल भिजवाते रहिए। साहूकार दूसरे दिन सुबह आटा–दाल मिर्च–मसाला से भरे दो थैले लेकर बुढ़िया के पास पहुंचा। बुढिया सन्तोषी थी, उसने कहा जरा ठहरिये। वह उठी और पास पड़े एक मटके का ढक्कन उठाकर देखा। बाद में बोली– आपका धन्यवाद!

लेकिन अभी मैं यह सामग्री नहीं ले सकती, मेरे पास एक–दो दिन का आटा– दाल पर्याप्त है। यह खत्म होने पर वही प्रभु फिर भेज देगा, जिसने पहले भेजा। कल की चिंता क्यों की जाए। बूढ़ी मां यह बात सुनकर साहूकार की आँखें खुल गई। उसे ज्ञान हो गया कि मैं जहां अपनी ग्यारहवीं पीढ़ी के लिए धन जमा करने की फिक्र में हूँ, वहीं इस गरीब बुढ़िया को कल की भी चिन्ता नहीं। इतना ज्ञान होने पर उसने अपना काफी सारा धन दीन–दुखियों, निराश्रितों व अपाहिजों की जरूरत पूरी करने में लगा दिया। बंधुओं! इस प्रसंग से हमें सन्तोषी और परोपकारी बनने की प्रेरणा मिलती है। किसी दुःखी का दुःख दूर करने से जो सन्तोष प्राप्त होगा, वही अक्षय धन है। उससे जन्म –जन्मान्तर सफल हो जाएंगें। जीवन वही सार्थक है, जिसमें परोपकार की भावना हो। इसके लिए भी तभी प्रेरित हुआ जा सकता है, जब व्यक्ति प्राणिमात्र के प्रति आत्मवत् हो। परोपकार के उद्देश्य से ही वृक्ष फलते हैं और नदियों में निर्मल जल का निरन्तर प्रवाह होता है। क्या हम जीवन में अपने द्रव्य, साधनों व सामर्थ्य का ऐसा ही सदुपयोग कर रहे हैं? क्या अर्जित धन व्यर्थ और आडम्बर के कार्यों में तो खर्च नहीं हो रहा? क्या हम अपने धन और सामर्थ्य से मानवता की नींव को मजबूती दे पा रहे हैं? ये ऐसे कुछ प्रश्न हैं, जिन पर हमें चिन्तन करना चाहिए। क्योंकि यदि हमारा पड़ोसी दुःखी है तो हमें सुख का अनुभव कैसे हो पायेगा? हमारे पास प्रभु कृपा से जो कुछ भी अपनी जरूरत से ज्यादा है, उसके होने का अर्थ क्या है ? इस पर अवश्य विचार करें। जमा पूंजी के चक्कर में न पड़कर अपने लिए पुण्य का संचय करते हुए सुखी, आनन्दमय और परोपकारी जीवन जीने का प्रयत्न करें।

– कैलाश 'मानव'

सपना पूरा करने के जिद

कभी–कभी ऐसा भी होता है कि व्यक्ति कठिन परिश्रम कर लक्ष्य तक पहुँचने वाला ही होता है कि कोई घटना–दुर्घटना उससे उसका सपना छीन लेती है, लेकिन जुलियो ने साबित किया कि मन यदि में लग्न और उत्साह हो तो कोई बाधा शिखर तक पहुँचने में रोड़ा बन सकती।

23 सितम्बर, 1943 को जन्मे जुलियो इग्लेसियस का बचपन से अपने पसंदीदा क्लब–रियल मेड्रिड की तरफ से फुटबॉल खेलने का सपना था। अभ्यास करते–करते वे अच्छे गोलकीपर बन गये। 20 वर्ष की उम्र तक आते–आते उनका सपना साकार होने के आसार बनने लगे। एक दिन उन्हें रियल मैड्रिड से खेलने के लिए अनुबंधित भी कर लिया गया। फुटबॉल के अनेक दिग्गज यह मान कर चल रहे थे कि जुलियो शीघ्र ही स्पेन के पहले दर्जे के गोलकीपर बन जाएंगे। 1963 की एक शाम को हुई भयानक कार–दुर्घटना ने जुलियो की जिन्दगी को पूरी तरह बदल कर रख दिया। रियल मेड्रिड और स्पेन का नंबर वन गोलकीपर बनने वाले जुलियो अस्पताल में थे।

उनकी कमर से नीचे का हिस्सा पूरी तरह लकवाग्रस्त हो गया। जुलियो फिर कभी चल पाएँगे अथवा नहीं, इसके बारे में शंका थी। जुलियो जीवन से निराश हो चुके थे। 8 माह बिस्तर पर रहने वाले जुलियो की जिन्दगी तब फिर से पटरी पर लौटने लगी जब उन्हें एक नर्स ने गिटार भेंट किया। जुलियो ने गाने, कविताएँ लिखने के साथ गिटार बजाना और गाना सीखा। उसके पश्चात्, उन्होंने एक संगीत प्रतियोगिता में भाग लिया तथा शानदार गीत गाकर प्रथम पुरस्कार जीता। आज वे विश्व के जाने माने गीतकार, संगीतकार, गायक और गिटार वादक हैं।

बंधुओं ! सपना पूरा नहीं हो पाने पर निराश होने की आवश्यकता नहीं, जीवन में आपके लिए अभी भी बहुत–कुछ बचा हुआ है। उसे हासिल करने की जिद को जारी रखिए।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

सोहनलाल, कैलाश की बात सुन कर प्रसन्न हो गया। सेवा के यज्ञ में वह अपनी भी आहुति देना चाहता था, इसका अवसर प्रस्तुत हुआ तो वह इसे हाथ से गंवाना नहीं चाहता था। वह कैलाश को दवाइयों की एक बड़ी दुकान पर ले गया तथा उसके मालिक से बात कर कैलाश को हर महीने दो हजार रुपयों तक की दवाएं उपलब्ध कराने का प्रबन्ध कर दिया। सोहनलाल की इस पहल से कैलाश का अस्पताल व उसके मरीजों की सेवा–सुश्रूषा करने का रिश्ता और घनिश्ठ तथा स्थाई हो गया।

कैलाश के पोस्ट ऑफिस में ही एक सहयोगी था जिसे सब लोग मक्खीचूस कह कर चिढाते थे। यह कैलाश को रोज कार्यालय से कहीं जाते देखता था तो एक दिन पूछ लिया कि वो कहां जाता है। कैलाश ने बताया कि सामने जो हॉस्पीटल है वहीं जाता हूं, मरीजों की छोटी मोटी आवश्यकताएं पूरी करने की कोशिश करता हूं, आप भी चलो मेरे साथ, बहुत अच्छा लगेगा।

कैलाश की इस बात पर कार्यालय के अन्य साथी हँस पड़े और कहने लगे किस मक्खी चूस को साथ ले जा रहे हो। अपने ऑफिस में ट्रांसफर की पार्टी में एक रु. तक जेब से नहीं निकाल पाता, यह क्या करेगा?

कैलाश ने अपने साथियों की बात हँस कर टाल दी और उसे अपने साथ ले गया।

अंश - 64

काइरोप्रैक्टिक : जोड़ो में दर्द का इलाज बिना दवा-सर्जरी से

काइरोप्रैक्टिक में रीढ़ की हड्डियों या जोड़ों में आई खराबी को बिना दवा और सर्जरी के ठीक किया जाता है। इसमें हाथों से रीढ़ की हड्डियों में आए अंतर को सेट किया जाता है। जिससे मरीज को दर्द में राहत मिलती है। यह प्रैक्टिस अभी विदेशों में प्रचलित है लेकिन भारत में धीरे–धीरे बढ़ रही है। इसमें विदेशों में आठ साल की पढ़ाई के बाद काइरोप्रैक्टर बनते हैं। इसका अलग कोर्स होता है।

इनमें कारगर थैरेपी : स्पोर्ट्स इंजरी, रीढ़ और हड्डियों से जुड़े सभी रोग जैसे स्पोंडलाइटिस, आर्थराइटिस, टेनिस एब्लबो, घुटनों का दर्द, गर्दन, कमर और पेन में आराम मिलता है।

रीढ़ की हड्डियों को दबाकर होता है इलाज

काइरोप्रैक्टर पहले मरीज की जांच करते हैं। वह हाथों से पता लेते हैं कि मरीज की रीढ़ की कौन सी हड्डी खिसकी है जिससे कमर, गर्दन, पैरों या सिर में सिर में दर्द हो रहा है। असको हाथों से एडजेस्ट (सेट) करते हैं। दो–तीन बार में ही मरीज को आराम मिलने लगता है।

आठ साल की होती है इसकी पढ़ाई

अभी विदेशों में ही इसकी पढ़ाई होती है। चार साल की बैचलर डिग्री मेडिकल स्टूडेंट्स के साथ लेते हैं। फिर चार–चार साल का मास्टर इन काइरोप्रैक्टिक या डॉक्टर्स ऑफ काइरोप्रैक्टिक की डिग्री होती है।

विदेशों में इसकी मान्यता अधिक

काइरोप्रैक्टिक की मान्यता विकसित देशों में अधिक है। केवल अमरीका में 70 हजार से अधिक इसके एक्सपर्ट हैं। भारत में इसके रजिस्टर्ड एक्सपर्ट 10–15 ही हैं।

ऐसे अलग है फिजियोथैरेपी से

काइरोप्रैक्टर को बीमारी की जांच और बिना दवा–सर्जरी के इलाज का अधिकार है जबकि फिजियों में डॉक्टर की सलाह से व्यायाम करवाया जाता है। इस थैरेपी में भी फिजियों को काफी महत्व है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

तपोवन से गौमुख, गौमुख से गंगोत्री, गंगोत्री से पहाड़ी क्षेत्रों में इठलाती– बलखाती, कभी बांये– कभी दायें। गंगामाता कभी थकी नहीं तो हमको थकने का अधिकार नहीं है। निरन्तर कर्मशीलता रखनी है। निरन्तर पुण्यशीलता एवं भगवत कृपा से बाई के चरणों में पहुँचते। प्रथम मंजिल पे सीढ़ियों पे चढ़कर के निश्चल प्रेम, अनन्त प्रेम, पूज्य माताजी श्रीमती सोहनदेवीजी, धानुका परिवार की बेटी, कुचामणिया परिवार, कुचामणिया परिवार में विवाह हो के पधारी। हम सब बच्चों का पालन–पोषण किया, संस्कारित किया। छः साल की उम्र में गीताजी का ज्ञान दिया। क्या अर्जुन तेरा मोह दूर हुआ? क्या तुझे बोधि प्राप्त हुई? विपश्यना अन्दर उतार, अनन्त –अनित्य है ये लहरें, ये तरंगें, ये संवेदनाएं, ये मस्तिष्क। सहस्रारचक्र की संवेदनाएं, आज्ञाचक्र ललाट, बांयी आँख–दायी आँख, आँख की भोह, नासिका, नासिका के दोनों छिद्र, होठ, बांया कान– दाया कान, ठोडी, गर्दन, वक्षःस्थल, पेट दोनों हाथ, पसलियाँ, हृदय, फैफड़े, लीवर, गाल ब्लेडर, आँतें, ये बाया पैर, कूल्हा, जंघा, घुटना, पंजा, अंगुलियाँ, दाहिना पैर ये सब अनित्य है। प्रतिक्षण बीस लाख नये परमाणु ने जन्म लिया– मर गये, जन्म लिया मर गये। प्रतिक्षण जब से माता के गर्भ में आये हैं। पूरे शरीर में संवेदनाएं प्रतिक्षण अनित्य, अनित्य, अनित्य। ये उत्पाद, व्यय कितने क्षणभंगुर? किस पर राग करूं? किस पर द्वेष करूं?

सेवा ईश्वरीय उपहार– 191 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023